472वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 40 | पंचम् अंक | दिसम्बर 2017

इस अंक में...

12 व्यक्ति की आत्मा ही उसकी सर्वोत्तम शिक्षक है
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
20 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
28 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
38 नवीनतम सामान्य ज्ञान
48 खेलकूद
55 रोजगार समाचार
57 युवा प्रतिभाएं
61 फोकस–भूख के विरुद्ध भारत का संघर्ष : आँकड़ों से यथार्थ तक
64 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
68 विश्व परिदृश्य
73 स्मरणीय तथ्य
76 संवैधानिक लेख–निजता का अधिकार
78 विश्व इतिहास लेख–यूरोप में समाजवादी आन्दोलन (1815-1914 ई.) : एक विवेचनात्मक अध्ययन
82 सामयिक लेख–महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसा
85 सामयिक लेख–रोहिंग्या भारत के लिए खतरा कैसे ?
87 धार्मिक लेख–भारत में धार्मिक सम्प्रदायों का विकास
89 संस्तुति लेख–स्वतन्त्र भारत की प्रमुख अनुशंसा समितियाँ/आयोग
91 अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग लेख–हिन्द महासागर परिधि संघ : उपलब्धियाँ एवं भावी दृष्टिकोण
93 विधि लेख–बाल श्रम-कानून और नीतियाँ तथा व्यावहारिक पक्ष
96 लोक-व्यवस्था लेख–द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग द्वारा पुलिस व्यवस्था पर दिए गए सुझाव
98 प्रौद्योगिकी लेख–पर्यावरण संरक्षण में नैनोटेक्नोलॉजी के विविध अनुप्रयोग
101 विज्ञान लेख–लिगो : गुरुत्वाकर्षण तरंगों का संसूचक
103 कृषि लेख–जैविक खेती
106 सार संग्रह
111 वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन–(i) उत्तर प्रदेश संयुक्त राज्य/ प्रवर अधीनस्थ सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2017
118 (ii) नाबार्ड ग्रेड-बी ऑफीसर्स परीक्षा, 2017
121 (iii) केन्द्रीय विद्यालय संगठन प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक भर्ती परीक्षा, 2017
130 (iv) उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत् उत्पादन निगम लिमिटेड 'तकनीशियन ग्रेड-II' परीक्षा, 2016
140 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
142 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
143 ऐच्छिक विषय–(i) गृह विज्ञान–यू.जी.सी.-नेट/ जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
148 (ii) वाणिज्य–यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
157 वार्षिक रिपोर्ट 2016-17–पेयजल एवं स्वच्छता क्षेत्र में अनुसंधान, विकास, मिशन तथा प्रोग्राम्स सम्बन्धी उपलब्धियाँ–एक दृष्टि में
159 तर्कशक्ति योग्यता–एस. बी. आई. (पी.ओ.) प्रारम्भिक परीक्षा, 2016
162 परिमाणात्मक अभिक्षमता–सिन्डीकेट बैंक (पी.ओ.) परीक्षा, 2017
168 अपना ज्ञान बढ़ाइए
169 क्या आप जानते हैं ?
170 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक-182
173 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध–वोट की राजनीति और साम्प्रदायिक सौहार्द
175 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-461 का परिणाम
176 English Language–Indian Bank Probationary Officers Exam., 2016

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

व्यक्ति की आत्मा ही उसकी सर्वोत्तम शिक्षक है

–साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

"Your Soul is the Perfect Master of Yourself."

वह हमारा सर्वोत्तम शिक्षक हो सकता है, जो चैतन्यमंत हो, जो ज्ञानवंत हो, जिसे अनुभव होता हो, जो समझ व समझा सकता हो, जो परिपूर्ण हो, परम विशुद्ध हो, जो हमारे सर्वाधिक निकट हो, जो हर पल हमारा मार्गदर्शक हो, जो हमारा परम सहायक हो.

वह आपकी आत्मा से भिन्न और अन्य कोई हो ही नहीं सकता है. जैन दर्शन का एक प्रमुख वाक्य है, परम सूत्र है कि– ''सहजात्मस्वरूप परम गुरु''

''अप्पा सो परमप्पा''

अर्थात् आपका सहज आत्मस्वरूप ही परमगुरु है और आत्मा ही परमात्मा है. समण भगवान महावीर ने अपने जीवनकाल में अनेक व्यक्तियों को अज्ञान की नींद से जगाया, उनका भ्रम मिटाया, उन्हें बहुत से प्रेरणा सूत्र दिए, उसमें से एक महत्वपूर्ण सूत्र यह था कि–

''आप ही अपने मित्र हैं, आप ही अपने हैं रिपु। सुप्रतिष्ठित हैं तो मित्र हैं, दुष्प्रतिष्ठित होने से हैं रिपु ॥''

आप ज्ञान प्राप्त कीजिए–चाहे पुस्तकों से, चाहे शिक्षकों से विद्यालयों में अथवा महाविद्यालयों में, किन्तु अन्ततः जो आपका मार्गदर्शक होगा, वह आपका विवेक ही होगा, उसकी अपनी आत्मा ही होगी. समण महावीर तो यहाँ तक कहा करते थे कि ''अगर आपको धर्म को भी स्वीकारना है तो अपनी आत्मा से परीक्षित धर्म को स्वीकारो. आत्मतुला पर रखकर हर तत्व का ज्ञान प्राप्त करो. सबसे पहले खुद को जानो और फिर खुद से इस लोक (Universe) को जानो.''

एकाकी अबोध बालक, जो ठीक प्रकार से अपनी भावनाएं व्यक्त भी नहीं कर पाता, जिज्ञासावश प्रत्येक नवीन वस्तु को देखने, छूने, समझने का प्रयास करता है, सीढ़ियाँ चढ़ने का प्रयास करता है. कभी असफल होता है, कभी सफल. बहुधा उसका मार्गदर्शन करने वाला भी कोई नहीं होता. लेकिन उसकी गतिविधियाँ जारी रहती हैं, उसके कृत्यों और अभिव्यक्तियों को मार्गदर्शन स्वयं उसकी आत्मा से प्राप्त होता रहता है. ऐसा मार्गदर्शन दृष्टिवान तो नहीं होता, लेकिन होता अवश्य है.

आज की चकाचौंध भरी दुनिया में हरेक व्यक्ति अपने स्वार्थ को सर्वोपरि रखता नजर आ रहा है. ऐसे में न केवल राजनीति में राजनीति रही है, बल्कि शिक्षा क्षेत्र हो या सामाजिक व धार्मिक संगठन–हर स्थान पर गन्दी राजनीति पनपती जा रही है. जहाँ महत्वाकांक्षा व प्रतिस्पर्धा का बाजार गर्म हो, वहाँ शिक्षकों में बढ़ती हौड़-दौड़ व स्वार्थ-परता भी कोई कम नहीं है. आज हर चीज़ का वैश्वीकरण (ग्लोबलाइज़ेशन) तो हो ही रहा है, साथ ही हर चीज का बाजारीकरण भी हो रहा है. शिक्षा के क्षेत्र में भी व्याव-सायिक सोच हावी हो चुकी है. एक-एक शिक्षक अपनी सुविधा- परक जिन्दगी पाने के लिए बालकों पर नित-नए खर्चे का बोझ बढ़ रहा है. विद्यालय में 6–7 घण्टे पढ़ाए जाने के बाद भी लगभग हरेक छात्र को ट्यूशन जाना ही पड़ रहा है. वे ही अध्यापक जो स्कूल में पढ़ाते हैं, पुनः उन्हीं विद्यार्थियों को अपने निजी केन्द्रों पर कोचिंग क्लासेज़ में पढ़ाते हैं. ऐसा क्यों ? विद्यार्थी व अभिभावकों से पूछे जाने पर जवाब मिलते हैं कि अगर ऐसा न करो, तो अध्यापक बालक-बालिकाओं के साथ पक्षपात करते नज़र आते हैं, जो बच्चे उनसे ट्यूशन लेते हैं, उनके मार्क्स ज्यादा व जो नहीं लेते हैं या कहीं और लेते हैं, तो उनके मार्क्स कम कर दिए जाते हैं. ये व्यापारिक लाभ की आकांक्षा हमारे नैतिक चरित्र का स्तर तो घटा ही रही है, साथ ही विद्यार्थी व शिक्षकों के पवित्र व्यवहार को भी प्रश्नांकित कर रही है. कहाँ वो युग था, जब चाणक्य जैसे कर्मठ, तपस्वी, निःस्वार्थ शिक्षक हुआ करते थे और चन्द्रगुप्त जैसे समर्पित निःस्वार्थ छात्र. हम आज के युग में ऐसे कथानकों से कितना कुछ सीख सकते हैं, परन्तु माता-पिता की भूमिका भी बच्चों में सादगी व उच्च विचार को प्रेरित करने वाली अब नहीं रही. ऐसे युग में अगर कोई हमें पतन के रास्ते से बचा सकता है, तो वह न तो सरकार है, न ही परिवार, न तो विद्यालय महाविद्यालय है, न ही मन्दिर-मस्जिद-गुरुद्वारा. एकमात्र अपना विवेक जगाना ही हमारा परम इष्ट हो. आपका अपना विवेक ही आपका सही मार्गदर्शक या शिक्षक हो सकता है. यह एक अन्तिम तथ्य है कि आप खुद ही खुद को सँभाल सकते हैं. आपका सर्वोत्तम शिक्षक, परामर्शक व मार्गदर्शक आप स्वयं हैं.

●●●